HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 7- गुप्त काल

चौथी शताब्दी ईसवी में, मगध में एक नए भारतीय राजवंश का उदय हुआ जिसने उत्तरी भारत के बड़े हिस्से पर एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। यह गुप्त साम्राज्य था जिसका शासन दो सौ वर्षों तक चला।

गुप्त साम्राज्य एक प्राचीन भारतीय साम्राज्य था जो तीसरी शताब्दी के अंत से लेकर 543 ईस्वी तक के समय के मध्य विद्यमान था। लगभग 319 ई. से 467 ई. तक के कालखंड में, इसने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से को अपने साम्राज्य में शामिल कर दिया।

गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है।

गुप्त साम्राज्य की वंशावली

शरीगुप्त

- इसने तीसरी शताब्दी ईस्वी में गुप्त राजवंश की स्थापना की थी|
- इसने "महाराज" की उपाधि धारण की थी|

घतोत्कच गुप्त

- यह श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी था|
- इसने भी "महाराज" की उपाधि धारण की थी|

चन्द्रगुप्त I (319-334 ईस्वी)

- इसने "महाराजाधिराज" की उपाधि धारण की थी|
- इसने 319 ईस्वी में "गुप्त संवत" की शुरूआत की थी जो इसके राज्याभिषेक का प्रतीक है।
- इसने लिच्छवी की राजकुमारी "कुमारदेवी" से विवाह किया और वैवाहिक गठबंधन की शुरूआत की जिससे उसे बिहार एवं नेपाल के हिस्सों में नियंत्रण स्थापित करने में सहायता मिली थी|

समुद्रगुप्त (335-380 ईस्वी)

- उसकी व्यापक सैन्य विजयों के कारण वी.ए.स्मिथ ने उसे "भारत का नेपोलियन" कहा है।

- उसके दक्षिणी भारत अभियान के दौरान "वीरसेन" उसका सेनापति था|
- प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान "वसुबन्धु" उसका मंत्री था|
- उसके विभिन्न अभियानों से संबंधित जानकारी का उपयोगी स्रोत "एरण अभिलेख" (मध्यप्रदेश) है।
- वह ब्राह्मण धर्म का अनुयायी एवं भगवान विष्णु का भक्त था| उसने श्रीलंका के राजा "मेघवर्मन" को बोधगया में मठ बनाने की अनुमति दी थी|
- उसने "विक्रमांक" और "कविराज" की उपाधि धारण की थी|

चन्द्रगुप्त II (380-412 ईस्वी)

- उसके दरबार में नौ विद्वानों की मण्डली थी जिसे "नवरत्न" कहा जाता था| ये विद्वान कालीदास, अमरसिंह, धनवन्तरि, वाराहमिहिर, वररुची, घटकर्पर, क्षपणक, वेलभट्ट और शंकु थे|

- उसके शासनकाल में "फाहियान" भारत आया था|
- उसने "विक्रमादित्य" की उपाधि धारण की थी|
- वह पहला गुप्त शासक था जिसने चाँदी के सिक्के चलाये थे|
- उसने "चन्द्र" नामक एक राजा को परास्त किया था जिसका उल्लेख दिल्ली के कुतुबमीनार के नजदीक स्थापित एक लौह स्तंभलेख में किया गया है।
- कुछ इतिहासकारों का मानना है कि समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त II के शासनकाल के बीच में रामगुप्त राजा बना था| "विशाखदत्त" रचित नाटक "देवीचन्द्रगुप्तम" में रामगुप्त को चन्द्रगुप्त II का बड़ा भाई बताया गया है|
- उसने शक शासकों से "ध्रुवदेवी" को छुड़ाया और बाद में उससे शादी कर ली थी|

कुमारगुप्त I (413-467 ईस्वी)

- वह ध्रुवदेवी का पुत्र था जिसने गुप्त साम्राज्य का विस्तार उत्तरी बंगाल से लेकर कठियावाड़ तक और हिमालय से लेकर नर्मदा तक किया था।
- उसके शासनकाल के दौरान हूणों ने भारत पर आक्रमण किया था|
- उसने "नालन्दा विश्वविद्यालय" की स्थापना की थी|

स्कन्दगुप्त (455-467 ईस्वी)

- उसने क्रूर हूणों को दो बार खदेड़ा और अपनी इस वीरतापूर्ण उपलब्धि के कारण 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी, जिसका उल्लेख "भीतरी स्तंभलेख" में किया गया है।
- वह वैष्णव था, लेकिन उसने अपने पूर्ववर्तियों की तरह सहनशीलता की नीति का पालन किया|

गुप्त सामाज्य का प्रशासन

- गुप्तकाल में सारी शक्तियां राजा के पास केन्द्रित होती थी| गुप्तकालीन शासकों में देवत्व का सिद्धांत भी प्रचलित था|
- राजा "परमेश्वर", "महाराजाधिराज" और "परमभट्टारक" की उपाधियां धारण करते थे| इस काल में शासन वंशानुगत था लेकिन ज्येष्ठाधिकार का प्रचलन नहीं था|
- गप्त शासकों के पास एक विशाल सेना होती थी।
- शाही सेना में "जबरन मजदूर" या "विष्टि" को भी शामिल किया गया था|
- राजा सूत्रधार एवं सर्वशक्तिमान के रूप में काम करता था और सामान्य रूप से सभी विवादों का फैसला करता था| इस काल में मामूली सजा दी जाती थी|
- मंत्रियों और असैन्य अधिकारियों की एक परिषद राजा को सहायता प्रदान करती थी| गुप्त साम्राज्य में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी "कुमारमात्य" थे|
- गुप्त साम्राज्य की शाही मुहर पर "गरुड़" का चिन्ह अंकित था| दक्कन में सातवाहनों द्वारा शुरू की गई "भूमि अनुदान" व्यवस्था एवं पुजारियों तथा प्रशासकों को दी जाने वाली राजनैतिक एवं

प्रशासनिक रियायतें गुप्तकाल में भी नियमित रूप से दी जाने लगी थी|

- समुद्रगुप्त के शासनकाल में एक नए पद "संधिविग्रह" का सृजन किया गया था। यह अधिकारी युद्ध और शांति के लिए जिम्मेदार होता था| यह पद "हरिसेन" को दिया गया था|

गुप्त सामाज्य के दौरान कला और वास्तुकला

- इस काल का सबसे उल्लेखनीय स्तंभलेख स्कंदगुप्त का "भीतरगांव" का "एकाश्म स्तंभलेख" है। इस काल में कला की "नागर" एवं "द्रविड़" शैली का जन्म हुआ था।
- इस काल में "गांधार कला"अनुपस्थित

- लेकिन मथुरा से प्राप्त "खड़े अवस्था में बुद्ध की एक प्रतिमा से" ग्रीक शैली की उपस्थिति का प्रमाण मिलता है। झांसी के पास "देवगढ़" के मंदिर तथा इलाहाबाद के पास "गढ़वास" के मंदिर की मर्तियों में गप्त कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

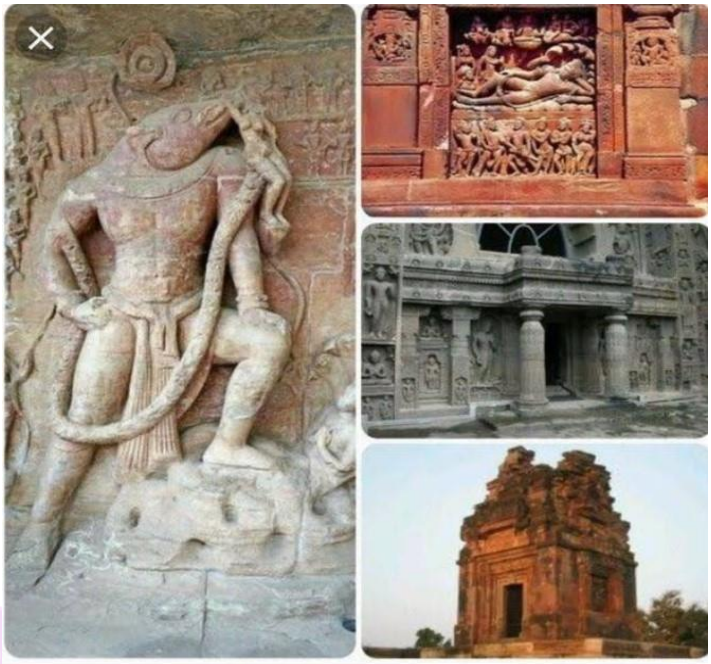

- सारनाथ से प्राप्त "बैठे हुए बुद्ध की प्रतिमा" गुप्त कला का प्रतीक है।
- ग्वालियर के पास बाग की गुफाओं में चित्रित अधिकांश चित्रों में गुप्त कला की महानता एवं भव्यता दिखाई देती है।
- अजंता के अधिकांश चित्र बुद्ध के जीवन को प्रदर्शित करते हैं। महान कवि और नाटककार कालीदास चन्द्रगुप्त II के दरबारी कवि थे। उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति "अभिज्ञानशाकुन्तलम" है। यह एक नाटक है। उनके अन्य नाटकों में "मालविकाग्निमित्रम", विक्रमोर्यवशियम्" और "कुमारसंभव" प्रमुख है। इसके अलावा उन्होंने "ऋतुसंहार" एवं "मेघदूत"नामक दो महाकाव्यों की भी रचना की थी।
- गुप्तकाल के दौरान धातुकर्म का भी महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाई पड़ता है। कारीगर धातु की मूर्तियों और स्तंभों के निर्माण में माहिर थे।
- चन्द्रगुप्त II और उसके उत्तराधिकारियों ने सोने, चाँदी और तांबे के सिक्के भी जारी किये थे।
- समुद्रगुप्त एक महान कवि था| समुद्रगुप्त ने "हरिसेन"नामक एक प्रसिद्ध विद्वान को संरक्षण दिया था।
- "काव्यादर्श" और "दशकुमारचरित" के लेखक दण्डिन थे|
- सुबन्धु ने "वासवदत्ता" नामक पुस्तक लिखी थी।
- इस काल के एक और प्रसिद्ध लेखक "विशाखदत्त"थे। उनके दो प्रसिद्ध नाटक "मुद्राराक्षस" एवं " देवीचन्द्रगुप्तम" है।
- गुप्तकाल के दौरान ही "विष्णुशर्मा" द्वारा "पंचतंत्र" की कहानियों का संकलन किया गया था।
- इस काल के एक और प्रसिद्ध कवि "शूद्रक" थे जिन्होंने "मृच्छकटिकम" नामक नाटक लिखा था।

- इस काल में भारवि द्वारा रचित "किरातार्जुनियम" में "अर्जुन" और "शिव" के बीच के संवादों का वर्णन है।
- बौद्ध लेखक "अमरसिंह" ने "अमरकोष" नामक पुस्तक की रचना की थी|

गुप्त साम्राज्य का आर्थिक जीवन

- गुप्त काल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। कालिदास के अनुसार राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि व पशुपालन का बहुत महत्व होता है।
- कालिदास ने गन्ने(ईख) व चावल(धान) की खेती का उल्लेख किया है। कालिदास के अनुसार काली मिर्च और इलायची मलय पर्वत(नीलगिरी) के पास बहुत होते थे ।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में यह लिखा है कि अत्यधिक वर्षा के कारण सुदर्शन झील का पानी चारों ओर फैल गया था। इसके कारण यहाँ के निवासियों के लिए दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। सुदर्शन झील सिंचाई हेतु काम में ली जाती थी। जूनागढ़ अभिलेख गुप्तकालीन सिंचाई का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- सिंचाई रहट (अरघट्ट) से भी होती थी।
- आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से भूमि के कई प्रकार बताए गए हैं। जैसे –
- क्षेत्र - खेती के लिए उपयुक्त भूमि
- वास्तु - निवास करने योग्य भूमि
- खिल - जो भूमि जोती नहीं जाती थी ।
- अप्रहत – बिना जोती गई जंगली भूमि।
- हलदण्डाकार हल रखने वाले प्रत्येक कृषक द्वारा दिया जाने वाला एक कर था।
- अदेवमातृक भूमि वह भूमि थी जिस पर कृषि वर्षा पर आधारित न होकर कृत्रिम साधनों द्वारा की गई सिंचाई पर निर्भर थी। अर्थात वह भूमि जिस पर बिना वर्षा की अच्छी खेती हो सके।
- अमरकोश में भूमि के 12 प्रकारों का उल्लेख है। नल भूमि माप में प्रयुक्त होने वाले धातु की छड या उसी लंबाई की रस्सी को कहा जाता था। पाटक भूमि का बड़ा माप था। धनु व दंड भी भूमि के नाप थे। आढ़वाप, द्रोणवाप, कुल्यवाप भी भूमि के नाप थे।
- गुप्तकाल में नालंदा, वैशाली आदि स्थानों से प्राप्त श्रेष्ठियों, सार्थवाहों, प्रथमालिकों आदि की मुहरें शिल्पियों की संगठनात्मक गतिविधियों को प्रदर्शित करती है।
- ब्रहस्पति स्मृति के अनुसार नवीन श्रेणियों के निर्माण के समय सदस्यों को कुछ पूंजी जमा कर एक दूसरे में विश्वास व्यक्त करना पड़ता था।
- व्यापारियों की समिति को निगम कहा जाता था। निगम का प्रधान सृष्टि कहलाता था। व्यापारियों के समूह को सार्थक तथा उनके नेताओं को सार्थवाह कहा जाता था।

- श्रेष्ठी बैंकर एवं साहूकार के रूप में कार्य करते थे। गुप्त शासकों ने प्राचीन भारत में सर्वाधिक सोने के सिक्के चलाए।
- सोने के सिक्कों को गुप्त अभिलेखों में दिनार कहा जाता था। दिनार लेटिन भाषा के देनेरिश शब्द से बना है। गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राओं पर राज्यों के स्पष्ट चित्र हैं। इन स्वर्ण मुद्राओं का उपयोग भूमि की खरीद-बिक्री में अधिक होता था।

गुप्त काल का प्रशासन

- गुप्त शासन प्रणाली प्राक् सामंतीय थी। राजा को रक्षाकर्ता तथा पालनकर्ता के रूप में सर्वोच्च महत्व दिया जाता था। राजा की सहायता के लिए अधिकारी वर्गों की नियुक्ति की जाती थी, जिसमें **कुमारा**मात्य सबसे बड़े अधिकारी थे।
- प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से राज्य को भुक्तियों में, भुक्तियों को विषयों में, विषयों को वीथियों में तथा वीथियों को ग्रामों में बाँटा गया था।
- गुप्त राजाओं ने प्रांतीय तथा स्थानीय शासन की पद्धति चलाई। ग्राम में मुखिया का पद महत्वपूर्ण था जो ग्राम श्रेष्ठों की सहायता से गाँव का कामकाज देखता था। स्थानीय लोगों की अनुमति के बिना ज़मीन की खरीद-बिक्री नहीं हो सकती थी।
- वहीं नगर के प्रशासन में स्थानीय व्यावसाइयों के संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। नगरों की प्रशासनिक परिषद में मुख्य वणिक, मुख्य शिल्पी, मुख्य व्यापारी जैसे कई व्यक्ति शामिल थे।
- भूमि अनुदान के द्वारा पुरोहित वर्ग के लोगों को भी प्रशासनिक अधिकार प्रदान किये गए थे।
- गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में न्याय पद्धति अत्यंत विकसित थी इसी काल में पहली बार दीवानी और फौजदारी कानून को भली-भाँति परिभाषित किया गया था।

गुप्त साम्राज्य का पतन

गुप्त साम्राज्य के अंतिम महान शासक स्कंदगुप्त की 467 ईस्वी में मृत्यु हो जाने के बाद गुप्त साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण निम्नलिखित हैं –

- अयोग्य तथा निर्बल उत्तराधिकारी
- शासन व्यवस्था का संघात्मक स्वरूप
- उच्च पदों का आनुवांशिक होना
- प्रांतीय शासकों के विशेषाधिकार
- बाह्य आक्रमण
- बौदध धर्म का प्रभाव